17 फरवरी 2009, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

मुक्ति का मार्ग शान्ति का मार्ग है, तनाव का नहीं, व्यग्रता का नहीं।

ह्न बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ-20

वर्ष : 31, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (द्वितीय), 2009 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित मुख्य प्रवचन हॉल का ह्न

नवीनीकरण शिलान्यास सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन स्थित मुख्य प्रवचन हॉल के नवीनीकरण का शिलान्यास श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी परिवार जयपुर के करकमलों से माघ शुक्ल त्रयोदशी शनिवार, दिनांक 7 फरवरी को किया गया।

इस अवसर पर आयोजित शिलान्यास सभा की अध्यक्षता पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका ने की। मुख्यअतिथि श्री जमनालालजी प्रकाशचन्दजी सेठी जयपुर थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल मंचासीन थे।

शिलान्यास सभा के मांगलिक कार्यक्रम का शुभारंभ महाविद्यालय के छात्र विवेक जैन के मंगलाचरण से हुआ। इस अवसर पर युवा फैडरेशन के राष्ट्रीय महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने हॉल के निर्माणकर्त्ता स्व. सेठ श्री पूरणचन्दजी गोदिका का स्मरण करते हुये वर्तमान में इस विशाल प्रवचन हॉल के नवीनीकरण की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हुये इस कार्य हेतु सम्पूर्ण द्रव्य प्रदान करनेवाले शिलान्यासकर्त्ता परिवार का आभार व्यक्त किया।

इस अवसर पर श्री प्रकाशचन्दजी सेठी ने कहा कि जिसप्रकार वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति अपने घर को आधुनिकतम बनाना चाहता है, उसीप्रकार हमारे जिनायतन और स्वाध्याय हॉल भी आधुनिकतम और स्वाध्याय की गतिविधियों हेतु सर्वानुकूलता से युक्त होना चाहिये।

आपकी माताजी श्रीमती सूरजदेवी सेठी ने अपने पुत्र के माध्यम से किये जा रहे ऐसे पुनीत कार्य के लिये अत्यन्त हर्ष व्यक्त किया।

पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने शिलान्यास प्रशस्ति का वाचन किया। तदुपरान्त शिलान्यासकर्त्ता परिवार को कन्नी-कटोरा, शिलापट्ट एवं प्रशस्ति भेंट की गई।

अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल का मार्मिक उद्बोधन हुआ।

प्रवचन हॉल के नवीनीकरण का सम्पूर्ण कार्य आर्किटेक्ट श्री विकास जैन एवं श्री अजितजी बंसल की देखरेख में किया जायेगा। इस कार्य हेतु इन दोनों महानुभावों ने अपनी नि:शुल्क सेवायें प्रदान करने की घोषणा की।

इसी अवसर पर श्री अजितजी बंसल ने अपने दादा स्व.पण्डित श्री चुन्नीलालजी चन्देरी की स्मृति में श्री सीमंधर जिनालय के नवीनीकरण का कार्य हॉल के नवीनीकरण के पश्चात् करवाने की स्वीकृति प्रदान की।

सभा का संचालन पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री ने किया।

सभा के उपरान्त शिलान्यास की विधि के अन्तर्गत सर्वप्रथम शिलान्यासकर्त्ता परिवार एवं उपस्थित जन समुदाय द्वारा पंचपरमेष्ठी पूजन की गई। तदुपरान्त शिलान्यास स्थल पर स्वर्ण-रजत ईंटों एवं शिलापट्ट के माध्यम से शिलान्यास किया गया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित धर्मेन्द्रकुमारजी शास्त्री ने श्री टोडरमल दि. जैन सि. महाविद्यालय के छात्रों के सहयोग से सम्पन्न कराये।

स्वर्ण जयन्ती समारोह

मुम्बई : यहाँ मुम्बादेवी रोड स्थित श्री सीमंधर जिनालय का स्वर्ण जयन्ती समारोह दिनांक 30 जनवरी से 1 फरवरी, 09 तक हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

इस प्रसंग पर ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के 'ध्यान का स्वरूप' विषय पर दो दिन मार्मिक व्याख्यान हुये।

साथ ही डॉ.उत्तमचंद जी जैन सिवनी, पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित अभयकुमारजी देवलाली, ब्र. हेमचन्दजी देवलाली एवं पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड का सान्निध्य भी मिला।

इसी अवसर पर डॉ. भारिल्ल की नवीनतम कृति 'ध्यान का स्वरूप' नामक पुस्तक की 1000 प्रतियाँ वितरित की गई।

सम्पादकीय –

चलते-फिरते सिद्धों से गुरु (22)

(गतांक से आगे ...) ह्न पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

भादों के महीने में काले बादलों की घनघोर घटाओं से दिन में भी अंधकार हो जाता है, दिल दहलाने वाली बादलों की गड़गड़ाहट, आकाश में बिजली की चमकन, मूसलाधार पानी की वर्षा, अनावश्यक घास-फूस, चारों ओर पानी ही पानी। यद्यपि वर्षाऋतु में ये सब अजूबा नहीं हैं; परन्तु इनके कारण मच्छर-मक्खियों का प्रकोप, कीट, पतंगों की भरमार, बिलों में पानी भर जाने से साँप, बिच्छू जैसे जहरीले जीवों का बिलों के बाहर निकल पड़ना और भयाक्रांत होकर जान बचाने के लिये इधर-उधर भागते हुए मनुष्यों के द्वारा जाने/अनजाने बाधा पहुँचाये जाने पर उन्हें डंक मार देना आदि आये दिन की घटनायें हैं।

ऐसी विपरीत परिस्थितियों में हम गृहस्थ लोग तो उनसे बचाव के कुछ न कुछ उपाय कर ही लेते हैं; पर यह सर्वसंग त्यागी नग्न दिगम्बर मुनि संघ क्या करे? यह विकट समस्या थी श्रावकों के सामने। उनको क्या पता कि मुनिराज तो अपने अतीन्द्रिय आनन्द में ऐसे मग्न रहते हैं कि उस आनन्द के सामने ये छुट-पुट बाधायें उन्हें बाधायें सी ही नहीं लगतीं।

ज्ञानी श्रावक सोचते हैं ह्न ''यह सच है कि मच्छर काटते हैं, आये दिन साँप-बिच्छुओं के उपसर्ग भी होते हैं, तेज पानी के समय आवारा पशु भी वसतिका आदि में आकर बाधा पहुँचाते हैं; परन्तु वे उन्हें परीषह और उपसर्ग जानकर उन बाधाओं को तत्त्वज्ञान तथा आत्मा के आश्रय से उपसर्गों को शान्ति से सहते हैं तथा परीषहों पर विजय प्राप्त कर प्रसन्न रहते हैं।

सार्वजनिक उपयोग के लिए बनी वसतिकाओं में किवाड़ भी तो नहीं होते। आगम भी किवाड़ लगाने की आज्ञा नहीं देता; क्योंकि साधकों के लिए बने आवासों पर किसी का एकाधिकार नहीं होता। अन्यथा वे परिग्रह की श्रेणी में आ जायेंगे, जिसके साधु सर्वथा त्यागी हैं।

अनुमति, आरंभ एवं परिग्रह त्याग प्रतिमा लेते समय पंचमगुणस्थान में भी जब ये आवासादि बनवाना, बनाने की अनुमति देना, आरंभ व परिग्रह की अनुमोदना करना भी संभव नहीं होता तो मुनि की भूमिका में यह सब कैसे संभव होगा? अतः इस सम्बन्ध में मुनि संघ से कुछ भी अपेक्षा रखना ठीक नहीं है।''

यह सब सोचकर श्रद्धालु श्रावकों का धर्मानुरागवश परेशान होना भी स्वाभाविक ही था, जबकि पूरा संघ एकदम सहजभाव से सबका ज्ञाता-द्रष्टा रहकर अपने आप में मग्न था, प्रसन्न था। किसी को कोई परेशानी नहीं थी, बल्कि उनके लिए तो उन उपसर्ग को शान्ति से सहना और सहज परिषहजय करना कर्मों की निर्जरा के कारण बन रहे थे।

वस्तुतः जिनके क्रोधादि चतुष्टय की तीन चौकड़ी का अभाव हो गया है, भेदज्ञान के अभ्यास से देह और आत्मा में भिन्नता का भाव प्रगट हो गया है, देह में एकत्व-ममत्व नहीं रहा; उनके लिए ये उपर्युक्त बाधायें कोई बाधायें ही नहीं लगतीं। वे इनके निरोध का न कोई उपाय स्वयं करते हैं, न किसी से कराते हैं तथा न करते हुए की अनुमोदना ही करते हैं। एकदम प्राकृतिक जीवन जीते हैं, निर्दोष मूलगुणों व उत्तरगुणों का पालन करते हैं।

प्रातः बाईसपरिषहों के स्वरूप पर ही आचार्यजी का प्रवचन प्रारंभ हुआ। उन्होंने कहा ह्न ''परीषहों को जीतना और उपसर्गों को सहना तो मुनियों के कर्मनिर्जरा का कारण है। इन बाधाओं को दूर करने की जरूरत नहीं है।

यद्यपि मुनि जीवन का साधनामार्ग अतीन्द्रिय आनन्द की अनुभूति से सम्पन्न होने से अत्यन्त आनन्दमय है; तथापि मुनि जीवन में शरीर सम्बन्धी विघ्न-बाधाओं का आ जाना असम्भव नहीं है; परन्तु धन्य हैं उन सन्तों का जीवन जो आत्मिक विकास की यात्रा पर गतिशील रहकर, उन समस्त स्थितियों को तत्त्वज्ञान के सहारे समभावपूर्वक सहन करते हैं। जैसे खेल में विजय प्राप्त करने पर खिलाड़ी को जीत की खुशी में छोटी-मोटी चोट की परवा ही नहीं होती; उसीप्रकार मुनि विघ्न-बाधाओं की परवाह नहीं करते। उपसर्गों की आँधी साधुओं की स्वरूपसाधनारूप ज्योति को नहीं बुझा पाती।

मुनि-जीवन में द्रव्य-क्षेत्र-काल-भाव की अपेक्षा विघ्न-बाधाएँ अथवा प्रतिकूलताएँ सदा एक-सी नहीं होतीं, वे विविधरूप होती हैं। उन विविध परिस्थितियों को समभावपूर्वक सह लेना, उन पर विजय प्राप्त कर लेना परीषह जय कहा जाता है।

इस सन्दर्भ में निम्न आगम के कथन उल्लेखनीय हैं ह्न

'मार्गाच्यवननिर्जरार्थं परिषोढव्याः परीषहाः ।।

मार्ग से च्युत न होने के लिए और कर्मों की निर्जरा के लिए क्षुधा-तृषा आदि की वेदना को सहजता से सह लेना परीषहजय है।'

'क्षुधादिवेदनोत्पत्तौ कर्मनिर्जरार्थं सहनं परीषहः।

क्षुधादि वेदना के होने पर कर्मों की निर्जरा करने के लिए उसे सहजता से सह लेना परीषहजय है।[१]'

'दुःखोपनिपाते संक्लेशरहितता परीषहजयः।

दुःख आने पर भी संक्लेश परिणाम न होना ही परीषहजय है।[२]'

'अत्यन्त भयानक भूख आदि की वेदना को जो ज्ञानी मुनि शान्तभाव से सहन करते हैं, उसे परीषहजय कहते हैं।[३]'

'क्षुधादि वेदनाओं के तीव्र उदय होने पर भी समतारूप परम सामायिक के द्वारा निज परमात्मा की भावना से उत्पन्न नित्यानन्दरूप सुखामृत के अनुभव से चलित नहीं होना परीषहजय है।[४]'

'गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास, मच्छर आदि की बाधाएँ आने पर आर्त परिणामों का न होना अथवा ध्यान से न चिगना परीषहजय है।

यद्यपि निम्न भूमिकाओं में साधक को उनमें पीड़ा का अनुभव होता है, परन्तु वैराग्य भावनाओं के चिन्तन–मनन द्वारा वे परमार्थ से चलित नहीं होते, दुःखी नहीं होते।[५]'

'आत्महित हेतु विराग–ज्ञान, ते लखें आपको कष्ट दान।।

आत्मा के हित के हेतु जो वैराग्य एवं ज्ञान है वह अज्ञानी जीवों को ही कष्टदायक लगते हैं। ज्ञानी तो वैराग्य और ज्ञान को आनन्दमय ही मानते हैं।'

यह बात भी विचारणीय है कि संक्लेशरहित भावों से अर्थात् समभावपूर्वक परीषह को जीत लेने से ही संवर होता है। तात्पर्य यह है कि परीषहजय में पीड़ा रहने पर भी वह कष्टप्रद नहीं लगती; क्योंकि परीषह जय का हर्ष अधिक होता है। ज्ञानी आत्मानंद के सम्मुख पीड़ा की परवाह ही नहीं करते।

'अज्ञानी जीव क्षुधादिक होने पर उनके नाश का उपाय तो नहीं करता; परन्तु दुःख सहने को परीषहजय मानता है। उसे परीषह सहना मानता है। सो वहाँ क्षुधादि के नाश का उपाय तो नहीं किया, परन्तु अन्तरंग में क्षुधादि अनिष्ट सामग्री मिलने पर दुःखी हुआ, रति आदि का कारण मिलने पर सुखी हुआ सो वे दुःख–सुखरूप जो परिणाम हैं, वही आर्त्तध्यान–रौद्रध्यान हैं ह्न ऐसे भावों से संवर कैसे हो? और इसे परीषहजय कैसे कहा जा सकता है?

दुःख का कारण मिलने पर दुःखी न हो और सुख का कारण मिलने पर सुखी न हो, ज्ञेयरूप से उनका जाननेवाला ही रहे, वही सच्चा परीषहजय है।[६]'

'जो मुमुक्षु पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा करने के लिए आत्म–स्वरूप में स्थित होकर क्षुधादि बाईस प्रकार की वेदनाओं से दुःखी न होकर निराकुल रहकर सहजता से सहता है, उसी को परीषहविजयी कहते हैं।[१]'

'परीषहजयश्चेति ध्यानहेतवः। परीषहजय ध्यान का कारण है।[२]'

उपर्युक्त आगम उद्धरणों के आलोक में नवीन कर्मबन्ध का रोकना संवर और पूर्वबद्ध कर्मों की निर्जरा करना ही परीषहजय का एकमात्र उद्देश्य है, प्रयोजन है। मात्र दुःख सहन करना परीषहजय का उद्देश्य नहीं है और न दुःख सहने को परीषहजय कहा ही जाता है। सच तो यह है कि आत्म–उपयोग की दशा में भूख–प्यासादि की वेदना का अधिक अनुभव नहीं होता, जो वेदना का ज्ञान होता है उससे मुनि दुःखी नहीं होते, मात्र ज्ञाता रहते हैं। संवरपूर्वक निर्जरा होकर मुक्ति की उपलब्धि होती है।

तत्त्वार्थसूत्र में बाईस परीषहों का उल्लेख इसप्रकार हैं ह्न

१. क्षुधा, २. तृषा, ३. शीत, ४. उष्ण, ५. दंशमशक, ६. नाग्न्य, ७. अरति, ८. स्त्री, ९. चर्या, १०. निषद्या, ११. शय्या, १२. आक्रोश, १३. वध, १४. याचना, १५. अलाभ, १६. रोग, १७. तृणस्पर्श, १८. मल, १९. सत्कार–पुरस्कार, २०. प्रज्ञा, २१. अज्ञान और २२. अदर्शन ह्न ये बाईस परीषह हैं।

१. क्षुधापरीषहजय में क्षुधारूपी अग्नि की ज्वाला को धैर्यरूपी जल से शान्त करना होता है। जो मुनि निर्दोष आहार नहीं मिलने पर या अल्पमात्रा में मिलने पर क्षुधा से वेदना को प्राप्त नहीं होता, अकाल में जिसे आहार लेने की इच्छा नहीं होती। जो स्वाध्याय और ध्यानभावना में तत्पर रहते हैं, वे क्षुधा परीषहजयी होते हैं। वे किसी पात्र में भोजन नहीं करते, किन्तु अपने हाथ में ही भोजन करते हैं; उनके शरीर पर वस्त्रादिक भी नहीं होते।

पुनश्च, जो मुनिराज अनशन, अवमौदर्य (भूख से कम खाना), वृत्तिपरिसंख्यान (आहार को जाते हुए अटपटे कठोर नियम लेते हैं) जिन मुनियों ने तप करते हुए दो दिन, चार दिन, आठ दिन, पक्ष, महीना आदि निराहार में व्यतीत हो जाते हैं और योग्य काल में, योग्य क्षेत्र में अन्तरायरहित शुद्ध निर्दोष आहार न मिले तो भी जो मुनि भोजन ग्रहण नहीं करते और इसकारण चित्त में कोई भी विषाद, दुःख या खेद भी नहीं करते, किन्तु धैर्य धारण करते हैं। वे मुनिराज क्षुधा परीषहजयी होते हैं।

असाता वेदनीय कर्म की उदीरणा हो, तभी क्षुधा–भूख उत्पन्न होती है और उस वेदनीयकर्म की उदीरणा छठवें गुणस्थानपर्यन्त ही होती है, उससे ऊपर के गुणस्थानों में नहीं होती। छठवें गुणस्थान में रहनेवाले मुनि के भी इतना पुरुषार्थ होता है कि यदि योग्य समय, निर्दोष भोजन का योग न बने तो आहार का विकल्प तोड़कर निर्विकल्पदशा में लीन हो जाते हैं, तब उनके क्षुधा परीषहजय कहा जाता है।[३] **(क्रमशः)**

१. सर्वार्थसिद्धि, ९/२ २. भगवती आराधना टीका, ११६५
३. कार्तिकेयानुप्रेक्षा, गाथा ९८ ४. वृहद्द्रव्यसंग्रह, गाथा ३५
५. जैनेन्द्र सि. कोश, भाग–३, पृष्ठ–३३ ६. मो.मा.प्र., अ.७, पृष्ठ २२९

१.अनगार धर्मामृत, ६/८३) २. वृहद्द्रव्यसंग्रह टीका ५७
३.तत्त्वार्थ टीका ९/९

आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर

आत्मार्थी छात्र डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में रहकर चारों अनुयोगों के माध्यम से जैनधर्म का सैद्धान्तिक अध्ययन कर सकें तथा साथ ही संस्कृत, न्याय, व्याकरण आदि विषयों का आवश्यक ज्ञान प्राप्त करें ह्न इस महत्त्वपूर्ण उद्देश्य से जयपुर में विभिन्न ट्रस्टों के सहयोग से श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय चल रहा हैं, जिसमें पूरे देश के विभिन्न भागों से आये छात्र अध्ययन कर रहे हैं।

अबतक 520 छात्र शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण करके शासकीय एवं अर्द्धशासकीय सेवाओं में रहकर विभिन्न स्थानों में तत्त्वप्रचार की गतिविधियाँ संचालित कर रहे हैं, जिनमें से 57 छात्र जैनदर्शनाचार्य की स्नातकोत्तर परीक्षा उत्तीर्ण कर चुके हैं।

ज्ञातव्य है कि यहाँ प्रवेश पानेवाले छात्रों को राज. संस्कृत वि.वि.की जैनदर्शन (त्रिवर्षीय शास्त्री स्नातक) कोर्स की परीक्षायें दिलाई जाती हैं, जो बी.ए. के समकक्ष हैं तथा सरकार द्वारा आई. ए. एस., कैट, मैट जैसी किसी भी सर्वमान्य प्रतियोगिता परीक्षा में सम्मिलित होने के लिये मान्यता प्राप्त हैं।

शास्त्री परीक्षा में प्रवेश के पूर्व छात्र को योग्यतानुसार दो वर्ष का राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राज.) का उपाध्याय परीक्षा का पाठ्यक्रम पढ़ाया जाता है जो हायर सैकेण्ड्री (12वीं) के समकक्ष है। इसप्रकार कुल 5 वर्ष का पाठ्यक्रम है। इसके बाद दो वर्ष का जैनदर्शनाचार्य का कोर्स भी है, जो (एम.ए.) के समकक्ष है।

उपाध्याय में प्रवेश हेतु किसी भी प्रदेश के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की सेकेण्डरी (दसवीं) परीक्षा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान व अंग्रेजी सहित उत्तीर्ण होना आवश्यक है।

यहाँ डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, बाल ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री व पण्डित प्रवीणजी शास्त्री के सान्निध्य में छात्रों को निरंतर आध्यात्मिक वातावरण प्राप्त होता है।

सभी छात्रों को आवास एवं भोजन की सुविधा नि:शुल्क रहती है।

आगामी सत्र 20 जून 2009 से प्रारंभ होगा। स्थान अत्यंत सीमित है, अत: प्रवेशार्थी शीघ्र ही निम्नांकित पते से प्रवेशफार्म मंगाकर अपना प्रार्थना-पत्र अंक सूची सहित जयपुर प्रेषित करें।

यदि प्रवेश योग्य समझा गया तो उन्हें **कोलारस (मध्यप्रदेश) में 13 मई से 29 मई, 2009 तक** होनेवाले ग्रीष्मकालीन प्रशिक्षण शिविर में साक्षात्कार हेतु बुलाया जायेगा, जिसमें उन्हें प्रारंभ से अन्त तक रहना अनिवार्य होगा।

यदि दसवीं का परीक्षाफल अभी उपलब्ध न हुआ हो तो पूर्व परीक्षाओं की अंक सूची की सत्यप्रतिलिपि के साथ प्रार्थनापत्र भेज सकते हैं। दसवीं का परीक्षा परिणाम प्राप्त होते ही तुरंत भेज दें।

– कोलारस का पता –
श्री देवेन्द्रकुमार जैन ,
होटल फूलराज कम्पाउण्ड,
कोलारस, जिला-शिवपुरी (म.प्र.)
मो.09425489646

पण्डित रतनचन्द भारिल्ल
प्राचार्य
श्री टोडरमल दि.जैन सि.महाविद्यालय,
ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
फोन : 0141-2705581, 2707458

क्यों लें महाविद्यालय में प्रवेश ?

1. श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का सन् 1977 से 31 वर्षों का गौरवशाली इतिहास है।
2. यहाँ पूर्णत: धार्मिक परिवेश मिलता है, जिससे बालक संस्कारशील धर्मनिष्ठ बन जाते हैं।
3. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल, ब्र. यशपालजी जैन, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील आदि अनेक विद्वानों के सान्निध्य में सतत् प्रशिक्षण से जैनतत्त्वज्ञान/दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान बनते हैं।
4. पूरे देश में धार्मिक अवसरों पर प्रवचन/विधान आदि कार्यों के निमित्त भ्रमण के अवसर के साथ-साथ समाज के साथ रहने का प्रायोगिक ज्ञान सीखने को मिलता है।
5. जैनदर्शन के विद्वान होने से स्व के कल्याण के साथ-साथ अपने परिवार-समाज के कल्याण में निमित्त होते हैं।
6. छात्रावास में रहने से अपने हिताहित का स्वयं निर्णय करने की सामर्थ्य प्रगट होती है।
7. यहाँ विभिन्न प्रान्तों के छात्रों के साथ रहकर पूरी भारतीय संस्कृति का परिचय प्राप्त करने का अवसर मिलता है।
8. महाविद्यालय के छात्र औसतन प्रतिवर्ष राजस्थान बोर्ड तथा विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में मैरिट में स्थान प्राप्त करते हैं।
9. संस्कृत भाषा में शास्त्री (बी.ए.) की डिग्री राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय की होने से अपेक्षाकृत रोजगार के अधिक उन्नत अवसर उपलब्ध होते हैं।
10. दर्शन व संस्कृत विषय के साथ आई.ए.एस. जैसी राष्ट्रीय प्रतियोगी परीक्षा व आर.ए.एस. आदि प्रान्तीय प्रतियोगी परीक्षाओं में उत्तीर्णता के अवसर प्राप्त होते हैं।
11. छात्रों की वक्तृत्वशैली, तर्कशैली एवं अध्ययनशीलता का विशेष विकास होता है, जिससे छात्र अन्य क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

इसप्रकार श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में प्रवेश पाकर आपके बालक का सर्वांगीण विकास होता है। वह अपने और अपने परिवार, समाज की उन्नति में निमित्त होता है। जैनदर्शन का विद्वान बनकर स्व-पर कल्याण के सम्पादन हेतु अग्रसर होता है।

क्या आप नहीं चाहते कि आपका बालक भी ऐसा हो ? यदि हाँ ... तो महाविद्यालय में प्रवेश हेतु बालक को **दिनांक 13 मई से 29 मई 2009 तक कोलारस (म.प्र.)** में आयोजित शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर में अवश्य भेजें।

ह्न पीयूष शास्त्री एवं धर्मेन्द्र शास्त्री

फॉर्म मंगाने का पता : श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15, फोन-0141-2705581, 2707458

शिक्षण शिविर सम्पन्न

पोन्नूर धाम (तमिलनांडु) : यहाँ 23 से 25 दिसम्बर तक आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सेंटर के तत्त्वाधान में त्रिदवसीय शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया ।

शिविर में दो स्तरों में बालबोध एवं वीतराग विज्ञान पाठमालाओं की कक्षाएँ ली गईं। इसमें अकलंक विद्यापीठ, तिरूमलै अर्हन्तगिरि मठ तथा महावीर पाठशाला, विशाखाचार्य तपोनिलय के छात्रों के अतिरिक्त तमिलनाडु के विभिन्न स्थानों से लगभग 250 शिविरार्थियों ने धर्म लाभ लिया। शिविर में जिनपूजन, प्रवचन, कक्षाएँ, शंका–समाधान एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि सम्पन्न कराए गए।

शिविर में पण्डित जंबूकुमारजी शास्त्री, डॉ. उमापति जैन शास्त्री, पण्डित इलंगोवनजी शास्त्री, पण्डित नाभिराजजी शास्त्री, पण्डित पद्मकुमारजी शास्त्री, पण्डित बालाजी शास्त्री एवं पण्डित सोमप्रभजी शास्त्री आदि विद्वानों के प्रवचन एवं कक्षाओं का लाभ मिला।

अंतिम दिन परीक्षाएँ ली गईं और विशेष योग्यता प्राप्त शिविरार्थियों को पुरस्कृत किया गया। शिविर को सफल बनानें में सर्व श्री ब्र.बाँके बिहारीजी शास्त्री, श्रीपालजी, पृथ्वीराजजी, मुकेशजी, राजीवजी एवं कृष्णकुमारजी आदि का भरपूर सहयोग मिला। **– डॉ.बी.उमापति जैन**

प्रथम वार्षिकोत्सव सानन्द सम्पन्न

बदरवास (म.प्र.) : यहाँ श्री महावीर जिनालय में दिनांक 19 एवं 20 जनवरी 09 को पंचकल्याणक के प्रथम वार्षिकोत्सव का भव्य आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगल कलश शोभायात्रा के पश्चात् जिनमंदिर में ध्वजारोहण से हुआ। इस प्रसंग पर प्रात: पूजन–विधान, दोपहर में वैराग्य पाठ एवं पण्डित मांगीलालजी कोलारस के प्रवचन हुए ।

विधि–विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री एवं उनके सहयोगी पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ, पण्डित कान्तिलालजी जैन इन्दौर, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल एवं स्थानीय विद्वान पण्डित राहुलजी शास्त्री ने सम्पन्न कराये । **– अभयकुमार जैन**

बाल सी.डी. के छठे पुष्प का विमोचन

आचार्य कुन्दकुन्द सर्वोदय फाउन्डेशन रजि. जबलपुर द्वारा बाल वर्ग को संस्कारित करने के प्रयासों के अन्तर्गत अग्रिम कड़ी के रूप में पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा निर्देशित '**तोता तू क्यों रोता**' सी. डी. तैयार हुई है।

इस सी. डी. का विमोचन चैतन्यधाम पंचकल्याणक के अवसर पर श्री अनन्तराय ए. सेठ मुम्बई ने किया। इस सी.डी. में कुल 9 गीत हैं, जिनकी रचना ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना और पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर ने की है।

श्री देवीलालजी कस्तूरचंदजी जैन के सहयोग से तैयार इस सी.डी. का निर्देशन श्री विराग शास्त्री ने किया है । सी.डी. प्राप्त करने के इच्छुक 09373294684 पर संपर्क कर सकते हैं।

जिला फैडरेशन का शपथ-ग्रहण

बाँसवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनाँक 25 जनवरी, 09 को साधर्मी मिलन समारोह के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की बाँसवाड़ा जिले की कार्यकारिणी का शपथ – ग्रहण समारोह पण्डित विजयकुमारजी बडोदिया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि के रूप में पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर–प्रभारी राज.प्रदेश तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में पण्डित राजकुमारजी जैनदर्शनाचार्य–प्रान्तीय महासचिव, श्री शान्तिलालजी सेठ, श्री धूलजीभाई ज्ञायक, श्री धनपालजी ज्ञायक, श्री बदामीलालजी शाह, श्री प्रकाशजी शाह मंचासीन थे ।

कार्यक्रम में श्री वीरेन्द्रजी ज्ञायक को जिलाध्यक्ष के रूप में एवं पण्डित आकाशजी शास्त्री को महामन्त्री के रूप में शपथ दिलाई गई। आपके अतिरिक्त 40 दम्पतियों ने कार्यकारिणी एवं पदाधिकारी सदस्य के रूप में शपथ ग्रहण की ।

प्रान्तीय प्रभारी पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री ने सदस्यों को सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें आत्मानुभूति, तत्त्वप्रचार व अहिंसा के उद्देश्यों को लेकर विद्यार्थी वात्सल्य के साथ कार्य करना होगा। पण्डित राजकुमार शास्त्री ने सहयोग, समर्पण, समन्वय, संगठन एवं स्वाध्याय के पंच सकार को अपनाने की प्रेरणा दी । अध्यक्षीय उद्बोधन में पण्डित विजयकुमारजी शास्त्री ने फैडरेशन के सभी पदाधिकारियों एवं सदस्यों को शुभकामनायें देते हुए कहा कि आप सभी के द्वारा बागड़ क्षेत्र में तत्त्वज्ञान की धारा अवश्य ही प्रचारित होगी । **– गणतंत्र ओजस्वी, प्रान्तीय प्रचार मन्त्री**

भव्य वेदी शिलान्यास महोत्सव

राजकोट (गुज.) : यहाँ दिनांक 9 जनवरी 09 को प्रात: श्री 1008 महावीर जिनालय एवं श्री विद्यमान बीस तीर्थंकर जिनालय हेतु वेदी शिलान्यास महोत्सव सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर मंगल कलश शोभायात्रा के पश्चात् पारस कम्युनिटी हॉल में श्री जिनेन्द्र अभिषेक, नित्यनियम पूजन एवं श्री सम्मेदशिखर मंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री किशोरभाई लखानी ने की । मुख्यअतिथि श्री मुकुन्दभाई खारा थे। सभा का संचालन पण्डित रजनीभाई दोषी हिम्मतनगर ने किया।

भगवान महावीरस्वामी की वेदी का शिलान्यास श्री वीरेन्द्रभाई खारा के करकमलों से, बीस तीर्थंकर जिनालय वेदी का शिलान्यास समस्त मुमुक्षु संघ द्वारा एवं त्रय शिखर का शिलान्यास ब्रहमचारिणी बहिनों एवं भाईयों द्वारा किया गया।

शिलान्यास की मंगलविधि प्रतिष्ठाचार्य बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री के निर्देशन में उनके सहयोगी पण्डित कांतिलालजी इंदौर, पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ एवं स्थानीय पण्डित सुनीलजी जैनापुरे ने सम्पन्न कराई।

ह्न वीरेन्द्र भाई खारा

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार 22

चौथा प्रवचन

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

'संसार में सर्वत्र दुख ही दुख हैं, सुख तो एकमात्र मोक्ष में ही है' ह्न विगत अधिकारों में यह सिद्ध करने के उपरान्त अब उक्त दुखों के मूलकारण क्या हैं और मुक्ति की प्राप्ति कैसे होती है ? ह्न इस बात पर विचार करते हैं।

इस बात का संकेत वे इस अधिकार के मंगलाचरण में ही दे देते हैं; जो इसप्रकार है ह्न

इस भव के सब दुखनि के कारण मिथ्याभाव।
तिनकी सत्ता नाश करि प्रगटै मोक्ष उपाव।।

इस संसार के सभी दुखों के मूल कारण मिथ्याभाव हैं। उनकी सत्ता का नाश होने पर ही मोक्ष का उपाय प्रगट होता है।

मिथ्याभाव का अर्थ है मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र। इन तीनों का एक नाम मिथ्यात्व है।

ध्यान रहे मिथ्यात्व शब्द का प्रयोग अकेले मिथ्यादर्शन के अर्थ में भी होता है और मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र ह्न इन तीनों के समुदाय के रूप में भी होता है।

इसीप्रकार सम्यक्त्व शब्द के अर्थ के संदर्भ में भी समझना चाहिए। अकेले सम्यग्दर्शन के अर्थ में भी सम्यक्त्व शब्द का प्रयोग देखा जाता है और सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र ह्न इन तीनों के समुदाय के रूप में भी होता है।

इसप्रकार हम कह सकते हैं कि मिथ्यात्व अनंत दुख (संसार) का कारण है और सम्यक्त्व अनंत सुख (मोक्ष) का कारण है।

विगत अधिकारों की भांति इस अधिकार के आरंभ में भी वे रोगी और वैद्य के उदाहरण से अपनी बात स्पष्ट करते हैं।

विगत अधिकारों में रोग के स्वरूप का निदान किया गया था और अब उसके कारण की चर्चा चल रही है, वदपरहेजी की बात चल रही है। इसीप्रकार विगत अधिकारों में दुख के स्वरूप का निदान किया गया था और अब यहाँ उसके कारणों की मीमांसा की जा रही है।

अपनी कथन शैली का औचित्य सिद्ध करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं कि जिसप्रकार वैद्य रोग के कारणों को विशेषरूप से बताये तो रोगी कुपथ्य का सेवन न करे, वदपरहेजी से बचे तो रोग रहित हो जावे; उसीप्रकार सद्गुरु संसार के कारणों का विशेषरूप से निरूपण करते हैं; जिससे संसारी जीव मिथ्यात्वादि कुपथ्य का सेवन नहीं करे तो सांसारिक दुखों से बच सकते हैं। यही कारण है कि यहाँ मिथ्याभावों का विशेष निरूपण आरंभ किया जा रहा है।

यहाँ कोई कह सकता है कि आपने तो मोक्ष के मार्ग पर प्रकाश डालने की प्रतिज्ञा की थी; पर यहाँ संसार के कारणों की चर्चा में उलझ कर ही रह गये हैं। आप तो हमें एकमात्र मुक्ति का उपाय बताइये, संसार के कारणों को जानकर हम क्या करेंगे ?

इसप्रकार के विचार व्यक्त करने वालों से पण्डितजी कहते हैं कि जिसप्रकार जबतक यह प्राणी वदपरहेजी नहीं छोड़ेगा, कुपथ्य का सेवन करना नहीं छोड़ेगा; तबतक इसे दी गई दवाइयाँ भी कुछ नहीं कर सकतीं।

उसीप्रकार जबतक यह जीव मिथ्यात्वादि भावों को नहीं छोड़ेगा; तबतक बाह्य सदाचरण भी कुछ कार्यकारी नहीं होगा।

यही कारण है कि मुक्ति का उपाय बताने के पूर्व संसार के कारणों की मीमांसा की जा रही है।

जिसप्रकार रोगों के कुछ कारण तो वंशानुगत होते हैं और कुछ वदपरहेजी रूप होते हैं; उसीप्रकार दुखों के कुछ कारण तो अनादिकालीन होते हैं और कुछ कारण वर्तमान गल्तियों के रूप में पाये जाते हैं।

अगृहीत मिथ्यात्वादि तो अनादिकालीन हैं और गृहीत मिथ्यात्वादि वर्तमानकालीन गल्तियों के परिणाम हैं।

इस ग्रंथ मोक्षमार्गप्रकाशक के आरंभ में ही कर्मबंधनिदान के प्रकरण में कर्मबंधन को अनादि सिद्ध करते हुए आत्मा के साथ ज्ञानावरणादि द्रव्यकर्मों का एकक्षेत्रावगाह और मोह-राग-द्वेषरूप भावकर्मों का क्षणिक तादात्म्यरूप संबंध बताया है। मोह-राग-द्वेष में मोह शब्द दर्शनमोह के अर्थ में लेने से मिथ्यात्व तथा राग-द्वेष शब्द चारित्रमोह के सूचक होने से २५ कषायें ह्न इसप्रकार मिथ्यात्व और कषायें इस आत्मा में अनादि से ही हैं। इसका आशय तो यही हुआ कि इस आत्मा में मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र अनादि से ही हैं।

गृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र तो सैनी पंचेन्द्रियों के ही होने से अनादि से हो नहीं सकते हैं। अत: यह सहज सिद्ध ही है कि अनादि से होनेवाले मिथ्यादर्शन-ज्ञान-चारित्र नियम से अगृहीत ही होने चाहिए।

अगृहीत माने अनादिकालीन और गृहीत माने कुदेवादिक के निमित्त से नये ग्रहण किये हुए मिथ्यादर्शनादि।

जिसप्रकार सम्यग्दर्शन निसर्गज और अधिगमज के भेद से दो प्रकार का होता है; उसीप्रकार मिथ्यादर्शन भी अगृहीत और गृहीत के भेद से दो प्रकार का है। जिसप्रकार निसर्गज सम्यग्दर्शन में परोपदेश की मुख्यता नहीं होती; उसीप्रकार अगृहीत मिथ्यादर्शन में भी परोपदेश की आवश्यकता नहीं होती।

इसीप्रकार जैसे अधिगमज सम्यग्दर्शन में सच्चे देव-शास्त्र-गुरु का उपदेश निमित्त होता है; उसीप्रकार गृहीत मिथ्यादर्शन में कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु का उपदेश निमित्त होता है।

सम्यग्दर्शन के समान मिथ्यादर्शन को भी निसर्गज (अगृहीत) और अधिगमज (गृहीत) कह सकते हैं। छहढाला में दौलतरामजी ने इसप्रकार

का प्रयोग किया भी है, वे लिखते हैं ह्न

यों मिथ्यात्वादि निसर्ग जेह, अब जे गृहीत सुनिये सु तेह।[१]

उक्त पंक्ति में अगृहीत मिथ्यादर्शनादि को निसर्ग शब्द से अभिहित किया गया है।

इस चौथे अधिकार में अगृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र की चर्चा है और पाँचवें, छठवें और सातवें अधिकार में गृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का विवेचन किया जायेगा।

पाँचवें अधिकार में जैनेतर गृहीत मिथ्यादृष्टियों की, छठवें अधिकार में जैनों में पायी जानेवाली कुदेवादि की प्रवृत्ति रूप गृहीत मिथ्यादर्शनादि की और सातवें अधिकार में जैनियों में ही पाई जाने वाली तात्त्विक भूलों संबंधी गृहीत मिथ्यात्वादि की चर्चा है।

कुछ लोगों का कहना है कि पाँचवें व छठवें अधिकार में गृहीत मिथ्यात्वादि का और सातवें अधिकार में अगृहीत मिथ्यात्वादि का निरूपण है; क्योंकि उनके अनुसार जैनियों के तो गृहीत मिथ्यात्वादि हो ही नहीं सकते। उनका कहना यह है कि जब कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु जैनियों में होते ही नहीं; तब जैनियों को कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरुओं के निमित्त से होनेवाला गृहीत मिथ्यात्व कैसे हो सकता है ?

उनका यह कहना ठीक नहीं है; क्योंकि अगृहीत मिथ्यात्व अनादि–कालीन होता है; इसकारण एकेन्द्रियादि पर्यायों में भी पाया जाता है; किन्तु गृहीत मिथ्यात्व कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु के निमित्त से बुद्धिपूर्वक ग्रहण किया जाता है; अत: सैनी पंचेन्द्रियों के ही होता है। सैनी पंचेन्द्रियों में भी विशेष कर मनुष्यों में, मनुष्यों में भी कर्मभूमि के मनुष्यों में ही पाया जाता है।

भले ही उनकी मान्यता के अनुसार जैनियों में कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु न होते हों; पर आज के जैनियों में बुद्धिपूर्वक स्वीकार की गईं तात्त्विक भूलें और देव–शास्त्र–गुरु संबंधी गलत मान्यतायें तो पाई ही जाती हैं। अरे, भाई ! हम यह क्यों भूल जाते हैं कि जैनियों में भी तो मिथ्यादृष्टि द्रव्यलिंगी मुनि होते हैं। जैनियों में भी ऐसे अनेक मत–मतान्तर हो गये हैं; जिनकी देव–शास्त्र–गुरु संबंधी मान्यताएँ वीतरागता के विरुद्ध हैं। अत: यह कहने में क्या दम है कि जैनियों में देव–शास्त्र–गुरु संबंधी मिथ्या मान्यता नहीं है या कुदेव, कुशास्त्र और कुगुरु नहीं हैं।

यदि हम और अधिक स्पष्ट करें तो कह सकते हैं कि पाँचवें अधिकार में जैनेतरों के साथ श्वेताम्बर जैनों के, छठवें अधिकार में दिगम्बरों में बीसपंथी दिगम्बरों के और सातवें अधिकार में तेरापंथी दिगम्बरों में पाये जानेवाले गृहीत मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान और मिथ्याचारित्र का निरूपण है।

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि पण्डितश्री टोडरमलजी ने किसी को भी नहीं छोड़ा; न श्वेताम्बरों को, न दिगम्बरों को; न बीस पंथियों को, न तेरापंथियों को; सभी की जमकर धुनाई की है।

१. छहढाला : दूसरी ढाल, छन्द–८

अरे, भाई ! उन्होंने तो किसी की भी धुनाई नहीं की, उन्होंने तो सभी जीवों पर, सभी जैनियों पर अनंत करुणा करके, उनकी उन गंभीर भूलों की ओर ध्यान आकर्षित किया है कि जिन भूलों के कारण वे आत्महितकारी सर्वोत्कृष्ट जैनधर्म पाकर भी आत्महित से वंचित हैं, अनंत दुख उठा रहे हैं।

वे तो सच्चे हृदय से यह चाहते थे कि सभी जीव अपनी भूल सुधार कर सन्मार्ग पर लगें और अनंत सुख की प्राप्ति करें। लगभग प्रत्येक अधिकार के अन्त में प्रगट किये गये उनके उद्गारों से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है।

उक्त संदर्भ में अपनी उत्कृष्ट भावना व्यक्त करते हुए वे लिखते हैं ह्न

''यहाँ नानाप्रकार के मिथ्यादृष्टियों का कथन किया है। उसका प्रयोजन यह जानना कि उन प्रकारों को पहिचानकर **अपने में ऐसा दोष हो तो उसे दूर करके सम्यक्श्रद्धानी होना, औरों के ही ऐसे दोष देख–देखकर कषायी नहीं होना; क्योंकि अपना भला–बुरा तो अपने परिणामों से है। औरों को तो रुचिवान देखें तो कुछ उपदेश देकर उनका भी भला करें।**

इसलिए अपने परिणाम सुधारने का उपाय करना योग्य है; सर्वप्रकार के मिथ्यात्वभाव छोड़कर सम्यग्दृष्टि होना योग्य है; क्योंकि संसार का मूल मिथ्यात्व है, मिथ्यात्व के समान अन्य पाप नहीं है।[१]''

ध्यान रहे यह गृहीत मिथ्यात्व, अगृहीत मिथ्यादृष्टियों को ही होता है। जिनके अगृहीत मिथ्यात्व नहीं है, उनके गृहीत मिथ्यात्व भी नहीं होता। तात्पर्य यह है कि जिसे गृहीत मिथ्यात्व है, उसे अगृहीत मिथ्यात्व तो होता ही है; पर सभी अगृहीत मिथ्यादृष्टियों को गृहीत मिथ्यात्व हो ही ह्न यह आवश्यक नहीं है।

अरे, भाई ! यह गृहीत मिथ्यात्व अमूल्य नर भव को बरबाद करनेवाली मनुष्यगति की नई कमाई हैं।

आश्चर्य तो इस बात का है; जो मनुष्य भव, भव को काटने के काम आ सकता था; वह अमूल्य मनुष्य भव गृहीत मिथ्यात्व के चक्कर में पड़कर स्व–पर के भव बढाने का काम कर रहा है।

यह गृहीत मिथ्यादर्शनादि अनादिकालीन अगृहीत मिथ्यादर्शनादि को पुष्ट करते हैं।

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, पृष्ठ–२६६–२६७

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

23 से 27 फरवरी	सम्मेदशिखरजी	शिलान्यास समारोह
1 से 3 मार्च	जयपुर	राजस्थान वि. वि. में संगोष्ठी
1 से 5 मई	जयपुर	विधान (बड़जात्या परिवार)
13 से 29 मई	कोलारस	प्रशिक्षण शिविर
1 जून से 22 जुलाई	यूरोप व अमेरिका	धर्म प्रचारार्थ यात्रा
26 जुलाई से 4 अगस्त	जयपुर	आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

17 फरवरी 2009, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

रत्नत्रय मण्डल विधान सानंद सम्पन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ श्री दिगम्बर जिन चन्द्रप्रभ चैत्यालय (सीमंधर जिनालय) में दिनांक 1 से 5 फरवरी तक रत्नत्रय मण्डल विधान का आयोजन किया गया। इसी अवसर पर ध्वजा परिवर्तन तथा भगवान शान्तिनाथ की प्रतिमाजी को विराजमान किया गया । ज्ञातव्य है कि चैत्यालय में इस नवीन प्रतिमाजी के पूर्व जो प्रतिमा विराजमान थी, उसका विहार फीनिक्स-अमेरिका में आयोजित पंचकल्याणक के अधिष्ठाता के रूप में हो गया था।

इसी अवसर पर विद्वान पण्डित रजनी भाई हिम्मतनगर, डॉ. योगेशजी अलीगंज, पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा व पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री जयपुर के प्रवचनों का लाभ सैकड़ों मुमुक्षओं ने लिया।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. महावीरप्रसादजी टोकर के निर्देशन में ध्रुवधाम बांसवाड़ा से पधारे पण्डित सनत शास्त्री व पण्डित सुमित शास्त्री ने सम्पन्न कराये।

विचार गोष्ठी सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ सिद्धार्थनगर जैन मंदिर में दिनांक 1 फरवरी को राजस्थान जैन साहित्य परिषद द्वारा आयोजित विचार-गोष्ठियों के क्रम में आचार्य कुन्दकुन्द देव की जन्म जयन्ती के उपलक्ष में विशेष संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील का 'जैन अध्यात्म के प्रचार-प्रसार में आचार्य कुन्दकुन्द का योगदान' विषय पर मार्मिक व्याख्यान हुआ। साथ ही डॉ. प्रेमचन्दजी रांवका ने भी सभा को संबोधित किया।

सभा की अध्यक्षता परिषद के अध्यक्ष श्री नवीनकुमारजी बज ने की। आभार प्रदर्शन परिषद के मंत्री श्री महेशजी चांदवाड ने किया। गोष्ठी के संयोजक व संचालक श्री शांतिलालजी गंगवाल थे।

हार्दिक शुभकामनायें !

जयपुर (राज.) : यहाँ दिगम्बर जैन सोशल ग्रुप राजस्थान रीजन द्वारा वार्षिक सम्मेलन के अवसर पर दिनांक 1 फरवरी को विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट सेवाओं के लिये पाँच महानुभावों को सम्मानित किया गया।

इस प्रसंग पर धार्मिक-सामाजिक एवं नैतिक चेतना के क्षेत्र में बन्धुत्व की भावना के साथ सेवा के रूप में उल्लेखनीय कार्यों के लिये श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के उप-प्राचार्य **पण्डित शांतिकुमारजी पाटील** को **यशस्वी समाजसेवी** की उपाधि से अलंकृत किया गया।

जैनपथप्रदर्शक एवं महाविद्यालय परिवार की ओर से आपको हार्दिक शुभकामनायें !

शोक समाचार

1. **गंगापुर सिटी (करौली)** निवासी श्री सुरेशकुमार अशोककुमार जैन की माताजी का दिनाँक 27 जनवरी 09 को शांत परिणामों सहित देहावसान हो गया। आप धार्मिक, स्वाध्यायी एवं आत्मार्थी महिला थीं।

2. **इन्दौर निवासी श्रीमती चन्दाबाई** ध.प. श्री धर्मचन्दजी गंगवाल का दिनाँक 23 जनवरी, 09 को 75 वर्ष की आयु में समाधिपूर्वक देहविलय हो गया है। आप पं. श्री इन्द्रजीतजी गंगवाल की माताजी थीं। आप धार्मिक एवं आत्मार्थी महिला थीं, आपकेपरिवार में भी निरन्तर धार्मिक माहौल रहता है। आपकी स्मृति में 500/ रूपये प्राप्त हुये हैं।

3. **मौ-भिण्ड निवासी श्रीमती कन्ठादेवी जैन** ध.प.स्व.श्री गुलाबचन्द जी जैन का दिनाँक 11 जनवरी को देहावसान हो गया। आप धार्मिक एवं स्वाध्यायी महिला थीं। आपकी स्मृति में 500/- रूपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें शीघ्र ही सद्गति को प्राप्त हों - यही भावना है।

प्रतिमा विराजमान हुई

नरोड़ा-अहमदाबाद : यहाँ चैतन्यधाम में प्रतिष्ठित श्री सीमंधरस्वामी की प्रतिमा को दिनाँक 7 जनवरी 09 को श्री जयंतिलालजी के निवास से शोभायात्रा पूर्वक श्री सीमंधर जिनालय लाया गया। जहाँ सर्वप्रथम जिनेन्द्र अभिषेक-पूजन पूर्वक पंचपरमेष्ठी विधान का भव्य आयोजन किया गया, तदुपरान्त मूलनायक सीमंधर भगवान को मंत्रोच्चार पूर्वक विराजमान किया।

विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित कान्तिलालजी इन्दौर एवं पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ ने सम्पन्न कराये। इस अवसर पर पण्डित सोनूजी शास्त्री एवं पण्डित उदयमणिजी शास्त्री के प्रवचनों का विशेष लाभ मिला।

दिनांक 7 फरवरी से 13 फरवरी, 09 तक परमागम श्रावक ट्रस्ट सोनागिरि द्वारा कुन्दकुन्द नगर सोनागिरि में भव्य पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित सम्पन्न हुआ। विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किये जायेंगे।

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127